दृष्टि The Vision

drishti

सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
Time allowed: 1 Hour 30 Minutes

अधिकतम अंक: 125
Maximum Marks: 125

Name: Narayan Upadhyay

Medium (English/Hindi): ____________

Center & Date: ____________

Mobile Number: ____________

Email: ____________

UPSC Roll No.: ____________

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहियें।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

All the questions are compulsory.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

केवल मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा भरा जाए *(To be filled by Evaluator only)*

Question Number	Marks
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	
9.	
10.	
Grand Total (सकल योग)	

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1.

खण्ड - A

4. सत्ता भ्रष्ट करती है और निरंकुश सत्ता पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है

"राजा बोला रात है
रानी बोली रात है
मंत्री बोला रात है
संतरी बोला रात है
जनता बोली रात है
सुबह-सुबह की बात है"
— गौरव पांडेय

बात 20वी सदी के यूरोप की है जब जर्मनी में हिटलर का उदय हुआ हिटलर ने प्रजातांत्रिक तरीके का प्रयोग कर सत्ता को प्राप्त किया था लेकिन कालांतर में उसने आपातकाल का प्रयोग कर सभी संस्थाओं को खत्म कर दिया और स्वयः को निरंकुश शासक के रूप में स्थापित किया जिसका परिणाम जर्मनी में फासीवाद के रूप में देखने को मिला

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यहूदियों के खिलाफ घृणा और नफरत की भावना फैलायी जाने लगी और फिर उनका कत्लेआम शुरु हो गया वह यही तक नहीं रुका आगे उसने राइनलैण्ड में सेना भेजी, आस्ट्रिया को अपने कब्जे में ले लिया फिर पोलैण्ड पर आक्रमण कर दिया जहा से द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत हुई जो यह दर्शाता है कि सत्ता तो भ्रष्ट बनाती है लेकिन निरंकुश सत्ता पूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है।

वही बात यूरोप में विद्यमान मध्यकाल में चर्च व्यवस्था की करे तो हमें निरकुशता और भ्रष्टाचार के कुछ अमूल्य उदाहरण मिलते है एक तरफ चर्च लोगों से कह रहा था कि वे शादी न करे तो वही दूसरी तरफ चर्च के पादरी पांच-पांच बीबीया रखते थे, फिर उनके द्वारा जनता से प्राप्त दान का उपयोग स्वयं के भोग विलास के लिए किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जाता था, यहा तक कि यदि कोई सही विचार भी हो और वो चर्च के विचारो से साम्यता नहीं रखता हो तो उसे खत्म कर दिया जाता था जैसे सुकरात द्वारा दिया गया विचार जिसके लिए अन्त में सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा लेकिन बाद में सुकरात का विचार सही सिद्ध हुआ इस पर किसी विचारक ने कहा कि –

" उस प्याले में जहर था ही नही वरना सुकरात कब का मर गया होता"

इसी प्रकार इस चर्च व्यवस्था ने गैलेलियो जैसे विद्वान को भी नहीं छोड़ा जिसने एक सही बात कही थी कि पृथ्वी, सूर्य का चक्कर लगाती है न कि सूर्य, पृथ्वी का चक्कर लगाता है जो चर्च का मानना था, अन्त में उसे फासी पर चढ़ा दिया गया और सन्

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

2. 2000 में चर्च के कहा कि गैलीलियो को माफ किया जाता है जो इस दुनिया के लिए एक हास्यापद से ज्यादा क्या हो सकता है जहा कातिल करने वाला पीड़ीत को माफ कर रहा है इसी प्रकार इसी चर्च द्वारा ईसा मसीह को फाँसी पर चढ़ा दिया गया इसपर एक प्रख्यात लेखक ने व्यंग किया कि -

"मेरा कातिल ही मेरा मुंसिफ है क्या मेरे हक में फैसला देगा"

फिर फ्रांस की विद्दमान राजतंत्र ने भी निरंकुशता के उदाहरण प्रस्तुत किए 16वी व 17वी सदी में फ्रांस में निरंकुश राजतंत्र का शासन था जहा लुई चौदहवे ने स्वयं को कहा था कि - 'I am the state'(मैं ही राज्य हूँ) जो उसकी निरंकुशता को दर्शाता है उसने निरंकुशता का ही प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

करते हुए समाज में विभाजन कर डाला जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्टेटस में जनता को बाट दिया जहा प्रथम व द्वितीय स्टेट्स में कुलीन व उच्च वर्ग शामिल था जिसे सभी प्रकार के विशेषाधिकार प्राप्त थे वही तृतीय स्टेटस में गरीब जनता थी जिसे सभी प्रकार के कर चुकाने पड़ते थे इसी निरंकुशता को उसके आगे के शासको ने जारी रखा और जिसके कारण 1789 में फ्रांस की क्रांति हुई जिस पर किसी महान शायर ने कहा -

"जो समाज अपने विशेषाधिकारो को अपने सिद्धांतो से ज्यादा महत्व देता है वह दोनो से हाथ धो देता है"

19वी व 20वी सदी के सोवियत रूस में भी इसी प्रकार के उदाहरण मिलते है जहां पर रूस का शासक जार निकोलस-II था वह एक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

निरंकुश शासक था और उसे जनता की समस्याओं से कोई लेना देना नहीं था और अपनी दुनिया में भोग विलास में मस्त था वहीं दूसरी तरफ जनता गरीबी, भुखमरी जैसी समस्याओं से त्रस्त थी वहीं आगे जब वहां स्टालिन का शासन आया तो उसने भूमि सुधार के नाम पर 10 लाख लोगों को मरवा डाला तो 60 लाख लोगों को साइबेरिया जबरन भेज दिया, जबकि वह खुद उसी समाज का हिस्सा था जो वर्षों से पीड़ित और शोषित था इस पर अब्राहम लिंकन ने कहा कि-

"सामान्यतः सभी लोग कठिनाइयों का सामना करते हैं, लेकिन यदि किसी के चरित्र का पता लगाना हो तो उसे शक्ति दे दीजिए"
— अब्राहम लिंकन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

3. फिर निरंकुशता का उदाहरण साम्यवाद अपनाने वाले चीन में भी दिखता है जहां उसने लोगों की भलाई के नाम पर वहां के शासकों द्वारा निरंकुश तंत्र को लागू किया गया उसी का परिणाम था कि 1987 में लोकतंत्र समर्थकों पर उसने टैंक चलवा दिया और उसमें हजारों छात्र मारे गए वहीं अब भी चीन के शिनजियांग प्रांत में 10 लाख उइगर मुस्लिमों को नजरबंद किया गया है और वहां पर शासन व प्रशासन में व्यापक भ्रष्टाचार निहित है और लोगों की आजादी पर अंकुश लगाया जाता है इस पर तुलसीदास ने कहा है –

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवसि नरक अधिकारी"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

वहीं उत्तर कोरिया भी इस मामले में पीछे नहीं है वहां कि जनता भूखों मर रही है शिक्षा व स्वास्थ्य व्यापक रूप से पिछड़ा है लेकिन वहां का शासक न्यूक्लियर मिसाइल का टेस्ट कर रहा है उसकी निरंकुशता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसने अपने चाचा को सिर्फ इसलिए कुत्तों से खिलवा डाला की उन्होंने उसकी बात नहीं मानी और एक अपने ही सैन्य अधिकारी को कोड़ो से मार डालने का आदेश किया क्योंकि उसने मीटिंग में बड़ी देरव ली थी उसी प्रकार वहां के अधिकारियो द्वारा जनता से भ्रष्टाचार किया जाता है।

दक्षिण पूर्व एशिया का एक छोटा सा देश ब्रुनेई है जहां निरंकुश राजतंत्र

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

का शासन है वहां निरंकुशता ने भ्रष्टाचार को इस तरह फैलाया है कि एक तरफ वहां कि आम जनता त्रस्त है तो दूसरी तरफ वहां का शासक सोने के हवाई जहाज से चलता है वह अपने ऐशो-आराम पर करोड़ो डालर खर्च करता है एक गाने के कन्सर्ट में उसने एक गायक को 'ब्लैंक चैक' दिया और उसे अपने अनुरूप धन लेने को कहा जो उसके निरंकुशता और भ्रष्टाचार को दर्शाता है इस पर कौटिल्य ने कहा था कि -

"यह संभव है कि तालाब में तैरने वाली मछली हवा में उड़ने लगे लेकिन यह असंभव है कि राज्य कर्मचारी रिश्वत न ले"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

4. फिर भारत भी इस प्रक्रिया से अछूता नहीं है जहां इसके उदाहरण न मिलते हो मध्यकाल में अलाउद्दीन खिलजी जिसने केवल एक स्त्री के मोह में चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया और अपने विरोधियों को मरवा डाला फिर आगे औरंगजेब एक निरंकुश शासक हुआ जिसने अपने पिता को जेल में रखवा, हिंदु धर्म के विरुद्ध अनेक कदम उठाए जजिया कर लगाए दिया, मंदिर को तोड़ने के आदेश दिए आगे ब्रिटिश शासन की स्थापना ने उपनिवेशवाद को जन्म दिया जहां उसने भारत का सदम शोषण किया जिसका परिणाम आर्थिक क्षेत्र में हस्तशिल्प उद्योगों के पतन,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भूखमरी, बेरोजगारी जैसी घटना देखने को मिली, तो वहीं सामाजिक क्षेत्र में सांप्रदायिकता का विकास हुआ जान सालिवन ने कहा था कि -

"हमारी प्रणाली एक स्पंज की तरह है, जो गंगा के तटों से अच्छी चीजों को सोखकर टेम्स के तटों पर निचोड़ देती है"

फिर एक दूसरा पक्ष यह भी है कि कुछ ऐसे भी उदाहरण मिले है जो निरंकुश होते हुए भी भ्रष्ट नहीं नहीं अपितु संयमित रूप से जीवन जिया जैसे - भारत में अशोक जिसने कालिंग युद्ध के बाद युद्ध की नीति को छोड़ दिया और 'धम्म' की नीति पर चला और उसने कल्याणकारी शासन

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

की स्थापना पर बल दिया और घोषित किया 'सारी प्रजा मेरी संतान है' फिर आगे यही उदाहरण अकबर के रूप में सामने आया वह उस समय भारत में सुलह-ए-कुल की नीति को अपना रहा था जब दुनिया में धर्म के नाम पर रक्त बहाया जा रहा था।

आधुनिक काल में भी ऐसे कुछ उदाहरण मिलते हैं जैसे दुबई का शासक जो निरंकुश तो है लेकिन उसने उसका प्रयोग देश को आगे ले जाने के लिए किया दुबई की रेतीली जमीन को उसने विश्व का बित्तीय केन्द्र बना दिया जो जनता के हित का ही काम है तुलसीदास ने इस पर कहा है—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

5.

"दैहिक दैविक भौतिक तापा
राम राज नहिं काहुहि व्यापा"

अतः यह स्पष्ट है कि दुनिया में हमें कई ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जिसने निरंकुश सत्ता और उसके परिणामों को दिखाया जो जनकल्याण के विरुद्ध था, सत्ता का उद्देश्य स्वयं के इच्छाओं व आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होनी चाहिए अपितु उसका प्रयोग जनहित व समाज हित में किया जाना चाहिए जैसा कि कुछ शासकों द्वारा किया गया राजनीति और उसके कर्तव्यों को लेकर महात्मा गांधी ने कहा है कि—
"धर्म विहीन राजनीति मृत देह के समान है जिसे जला देना चाहिए"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खण्ड - B.

२. सैद्धांतिक दृष्टि से, सिद्धांत और व्यवहार के बीच कोई अंतर नहीं होता, परंतु व्यवहार में होता है।

"समर शेष है नही पाप का भागी केवल व्याध होगा
जो तटस्थ है समय लिखेगा उसका भी इतिहास"

→ रामधारी सिंह दिनकर

बात 1867 की है एक भारतीय व्यक्ति द्वारा अदालत में मुकदमा दायर किया गया मुद्दा था कि एक अंग्रेज व्यक्ति से उसका झगड़ा हो गया था उस समय ब्रिटिश द्वारा भारत में 'विधि का शासन' व 'कानून के सम्मुख समानता' की लागू किया गया था लेकिन उस व्यक्ति ने पाया कि यह

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

6. तो महज दिखावा या व्यवहार में तो मद्य कुछ और ही था यूरोपीय व्यक्ति का केश यूरोपीय जज ही सुन रहा था वहीं जब निर्णय हुआ तो वह भी उसके विरुद्ध गया और अन्ततः उसी को दोषी ठहरा दिया गया इस घटना ने सिद्ध कर दिया कि सैद्धांतिक दृष्टि से सिद्धांत और व्यवहार के बीच कोई अंतर नहीं होता लेकिन व्यवहार में होता है।

बात अगर 'सिद्धांत' और व्यवहार की करें तो सिद्धांत एक कल्पना व आदर्श होता है जहां मानव पहुंचने की कल्पना करता है और इसी के अनुरूप नीतियाँ भी बनाता है वहीं 'व्यवहार' वास्तविकता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को दर्शाता है जो उन आदर्शों की वास्तविक स्थिति को दर्शाता है लेकिन मानवीय सभ्यता यह दर्शाती है कि मानव के सिद्धांत और व्यवहार में अंतराल लगातार विद्यमान रहे हैं जो राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण, नैतिकता व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधों में देखा जा सकता है।

राजनीति में वर्तमान में लोकतांत्रिक प्रणाली सबसे अधिक लोकप्रिय है जो अब्राहम लिंकन के शब्दों में लोगों का लोगों के लिए लोगों के द्वारा शासन से है यह व्यक्तियों के लिए समान राजनीतिक अधिकार की बात करता है भारत के संविधान में भी राजनीतिक न्याय की बात कही गयी है और

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संविधान के भाग-3 में मूल अधिकार भी दिए गए है अनु.19 मे संगम व संघ बनाने की स्वतंत्रता है तो वही अनु.325 मे बिना भेदभाव के सबको मतदाता सूची में शामिल करने का प्रावधान तो वही अनु.326 वयस्क आधार पर चुनावों की बात करता है साथ ही सबको चुनाव लड़ने का अधिकार है।

अतः सिद्धांत में यह मतमेत ही अच्छा प्रतीत हो रहा है लेकिन व्यवहार इससे हटकर है कई विशेषज्ञ आज के लोकतंत्र को भीड़ तंत्र की संज्ञा देता है जहां पर जनता धर्म, जाति, संप्रदाय, क्षेत्र व नेता के चेहरे पर वोट दे रही है, फिर चुनाव लड़ने का अधिकार सभी के पास है लेकिन क्या सभी चुनाव लड़

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

7. सकते है इस बात का भी परीक्षण किया जाना आवश्यक है, कानून के मुताबिक एक लोकसभा प्रत्याशी अधिकतम 70 लाख तक खर्च कर सकता है लेकिन व्यवहार में यह कई करोड़ो में होती है जो आम जनता के लिए संभव नही है जिस पर एक विचारक ने व्यंग करते हुए कहा कि-

"हमारा लोकतंत्र कुछ नही अपितु वह यह है कि हम चंद अमीरो मे से कुछ को चुनते है जो अगले पाँच साल हमारे ऊपर शासन करते है"

उसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में इस तथ्य का परीक्षण किया जाना चाहिए जब सम्पूर्ण विश्व में आर्थिक समानता की बात कही जाती है वही भारतीय संविधान की प्रस्तावना में आर्थिक न्याय

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

शब्द का उल्लेख है, फिर नीति निदेशक तत्वों में अनु. 39(b) में संसाधनो के ऐसे वितरण की बात कही गयी है 39(c) में संसाधनो के अलाभकारी हाथों में संकेन्द्रण को रोकने की बात है वही सरकार द्वारा मनरेगा, इंदिरा आवास व लघु व कुटीर उद्योगो को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि आर्थिक समानता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

वही अगर व्यवहार को परीक्षण करे तो हमें एक उलट सी तस्वीर मिलती है आज विश्व के 80 प्रतिशत संसाधनों पर केवल 20% लोगो का कब्जा है, अमेरिका व यूरोप के देश जहा विकासित की श्रेणी में है वहां के लोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उच्च जीवन स्तर को जी रहे है तो वही अफ्रीका के नाइजीरिया, सूडान, सोमालिया जैसे देशों में लोग भूखों मर रहे है भारत में क्रेडिट स्वीस की रिपोर्ट के अनुसार 60% सम्पत्ति केवल 1 प्रतिशत अमीरो के पास है वही शेष 99% प्रतिशत लोग केवल 40% सम्पत्ति में हिस्सा रखते है इस पर गालिब का एक प्रसिद्ध शेर है कि -

"हमे मालूम है जन्नत की हकीकत गालिब
मगर दिल को सुकून देने के लिए ख्याल अच्छा है"

अब [सामाजिक क्षेत्र] में देखे तो हमें कमोवेश यही तस्वीर नजर आती है हम बात सभ्य समाज (Civil Society) की करते है हीगल ने इसे राज्य का महत्वपूर्ण स्तम्भ बताया था जो सरकार और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

8\. जनता के बीच ब्रिज का कार्य करता है इसके तहत समाज में सभी को शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना, गरीबी व भुखमरी को दूर करना, समाज में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करना। सामाजिक कुरीतियो जैसे - दहेज प्रथा, शिशु हत्या को रोकना है इसके लिए सरकार द्वारा कानून भी बनाए गए है।

शिक्षा के लिए सन् 2009 में शिक्षा के अधिकार को कानूनी अधिकार दिया गया, मनरेगा को लागू किया गया है, दहेज प्रथा निवारण के लिए कानून बनाया गया है महिलाओं को सशक्त करने के लिए 'स्टैण्ड अप' जैसी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

योजनाओं को चालू किया गया है 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजना चलाई जा रही है।

लेकिन इन सिद्धांतो व इसके व्यवहारो के मध्य एक गहरी खाई है आज भी सभी बच्चो तक शिक्षा की पहुंच संभव नही हो पा रही जिस उम्र में बच्चों का मजदूरी का काम लिया जा रहा है, दहेज प्रथा यथावत विद्यमान है, जाति एक नए रूप को धारण करती जा रही है, महिलाओं के साथ हो रहे अपराध में वृद्धि तो अनुसूचित जाति व जनजाति का शोषण हो रहा है यह अत्यंत ही दुखद स्थिति है इसी पर दुष्यंत कुमार ने कहा था -

'कहा तो तय था चिराग हर घर के लिए
कहा चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए'

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वही सांस्कृतिक क्षेत्र में हम 'सर्व धर्म संभाव' की बात करते है 'हिन्दू-मुस्लिम-सिख-इसाई आपस मे सब भाई भाई' की बात करते है समाज में सहिष्णुता का संदेश देते है दुर्गा पूजा व ताजिया की शोभा यात्रा साथ-2 निकली है तो हम इस प्रेम को देखकर अत्यंत खुश होते है।

वही दूसरी तरफ धर्म के नाम पर खून बहाया जा रहा है 'ISIS', तालिबान अलकायदा जैसे संगठनों ने दुनिया में आतंक फैला रखा है तो वही बात अपने देश कि हो तो स्थिति ज्यादा अच्छी नही है हिन्दू-मुस्लिम के नाम

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

9\. पर दंगे हो रहे है कभी हिजाब का मुद्दा तो कभी माब लिंचिंग व गौकशी का मुद्दा इसने देश में असहिष्णुता का जहर घोल दिया है गांधी ने कहा था कि -

" आँख के बदले आँख की चाहत सम्पूर्ण विश्व को अंधा बना देगी" → महात्मा गांधी

अब बात हमारे नैतिकता की भी होनी चाहिए यहा तो हमारे आदर्श अत्यंत उच्च है जो बड़ो का सम्मान करना, सभी को समानता के भाव से देखना, महिलाओं को हमारे यहा देवी के रूप में कल्पना की गयी है तो प्रशासन को जनता का नौकर व सेवक बताया गया है तुलसीदास के रामराज्य की अवधारणा के शब्दो में -

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

"दैहिक दैविक भौतिक तापा
राम राज्य नहीं काहुं व्यापा"

लेकिन इसके भी अवधार का परीक्षण आवश्यक है आज प्रशासन भ्रष्टाचार से लिप्त है, अपराधियों - राजनेताओं - अधिकारियों के बीच एक भ्रष्ट तंत्र विद्यमान है, प्रशासक खुद को अभिजात्य वर्गीय समझ रहे हैं वे स्वयं को स्वामी होने की परिकल्पना कर रहे हैं तो हमारे आदर्श जहां माता पिता का सम्मान शामिल है वो वृद्धा आश्रम में जा रहे हैं संयुक्त परिवार का ढांचा टूट रहा है और समाज में झूठ फरेब में वृद्धि हो रही है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अब बात अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धांतो की भी होनी चाहिए जो सभी देश को समानता का दर्जा देता है सभी को मानवाधिकारों की समानता की बात करता है तो संयुक्त राष्ट्र में सभी की भागीदारी को सुनिश्चित करता है, IMF सदस्य राष्ट्रों को भुगतान संतुलन से निपटने में योगदान देता है तो WTO सभी में समान व्यापार के सिद्धांतो कि।

तो वहीं फिर प्रश्न यह भी उठता है कि संयुक्त राष्ट्र में केवल 5 देशों के पास वीटो क्यों है NPT केवल 5 देशों को ही परमाणु हथियार रखने की छूट क्यों देता है WTO, IMF व विश्व बैंक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

10. जैसी संस्था अमेरिका के प्रभाव में क्यों काम कर रही है वैश्वीकरण का लाभ विकसित देशों को अधिक तो विकासशील देशों को कम यह मुद्दा सिद्धांत और व्यवहार में अंतर को दर्शाता है।

अतः यह स्पष्ट है कि विश्व में अनेक ऐसे मुद्दे है जहां सिद्धांत व व्यवहार में एक चौड़ी खाई नजर आती है इस अंतराल को पाटना आवश्यक है ताकि अधिकतम मानवीय कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके गाँधी ने कहा है कि मनसा - वाचा - कर्मणा

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अर्थात अपने सिद्धांतो के अनुसार ही अपने व्यवहारो को करना चाहिए अतः हमें गांधी मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation